कुरील से कश्मीर के लिए सबक

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक- कृष्णन श्रीनिवासन (पूर्व विदेश सचिव)

07 जनवरी, 2019

''भारत और पाकिस्तान को जापान और रूस के विवादों के नवीन समाधानों की तलाश करने के तरीकों से सीख लेनी चाहिए।''

द्वितीय विश्व युद्ध ने विरासत में कई समस्याओं को आने वाली पीढ़ियों के लिये छोड़ दिया, जिसका संबंध केवल एशिया के कई विवादित क्षेत्रों से नहीं था। उनमें से एक चिंता कुरील श्रृंखला के चार द्वीपों के संदर्भ में है जिसपर जहाँ एक तरफ जापान अपना हक बताता है तो वहीं दूसरी तरफ इस पर सोवियत संघ के उत्तराधिकारी राज्य के रूप में रूस द्वारा कब्जा कर लिया गया है। 70 से अधिक वर्षों के बीत जाने के बावजूद, इस विवाद का समाधान नहीं निकल सका है और इसके कारण रूस-जापानी शांति संधि ठंडे बस्ते में पड़ा हुआ है।

दावे और प्रतिवाद

कुरील कुछ 56 द्वीपों का एक द्वीपसमूह है, जो जापान के होकैडो से रूस के कमचटका प्रायद्वीप तक लगभग 1,800 किमी की दूरी पर स्थित है। ये सभी रूसी अधिकार क्षेत्र में हैं, लेकिन जापान दो बड़े दक्षिणी द्वीपों, इटोरोफू और कुनाशिरि और दो अन्य, शिकोतन और हाबोमई को उत्तरी क्षेत्र के रूप में अपना दावा करता है। अगस्त, 1945 में सोवियत संघ द्वारा इन द्वीपों पर कब्जा कर लिया गया था, जिसके बाद 20,000 से कम की संख्या वाली पूरी जापानी आबादी को बेदखल कर दिया गया था। यह द्वीप अब पूर्व सोवियत संघ के विभिन्न जातीय समूहों के आबादी वाले हैं, लेकिन उनमें से केवल आठ वास्तव में बसे हुए हैं।

द्वीपों का मुख्य मूल्य, हालांकि रणनीतिक है- रूसियों ने मिसाइल सिस्टम तैनात किए हैं, वहां पनडुब्बी परियोजना की योजना बना रहे हैं और द्वीप का किसी भी अमेरिकी सैन्य उपयोग को रोकने का इरादा रखते हैं।

दोनों देशों में जनता की राय किसी भी रियायत के लिए पूरी तरह से विपरीत है। रूसी स्मृति जापान-रूस युद्ध (1904-05) और रूसी क्रांति के प्रारंभिक वर्षों के दौरान अमेरिका और यूरोप के साथ जापानी हस्तक्षेप को याद करती है। मास्को का कानूनी दावा याल्टा और सैन फ्रांसिस्को के युद्ध के बाद की बस्तियों पर आधारित है, जबकि 1855 और 1875 की रूस-जापान संधियों पर जापानी दावे की स्थापना की गई है। रूस और जापान दोनों के नेताओं को पता है कि उनके घरेलू राजनीतिक पदों पर दक्षिणपंथी से गंभीर खतरा होगा।

अति-राष्ट्रवादी हलकों के बीच, क्षेत्रीय मुद्दे हमेशा अत्यंत संवेदनशीलता वाले सवाल रहे हैं। जबकि जापान सरकार की आधिकारिक स्थिति यह है कि इनका रूस के साथ ऊर्जावान रूप से बातचीत जारी है, वास्तविकता यह है कि यह रूस में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और जापान में प्रधानमंत्री शिंजो अबे के सत्ता में आने के बाद ही कोई बात आगे बढ़ी है। वर्ष 2016 में श्री पुतिन की जापान यात्रा के बाद, दोनों नेताओं ने दोनों पक्षों के दावों और कानूनी स्थिति पर सवाल किए बिना द्वीपों पर कुछ संयुक्त उपक्रम शुरू किए हैं। पिछले साल दो शिखर सम्मेलनों में, वे संयुक्त क्षेत्र के सर्वेक्षणों और विशिष्ट परियोजनाओं की पहचान के साथ संयुक्त आर्थिक गतिविधियों के लिए सहमत हुए, जिसमें उद्यम और पर्यवेक्षण के तीन स्तर शामिल है।

इन प्रस्तावों में समुद्री प्रजातियां और जलीय कृषि, ग्रीनहाउस स्ट्रॉबेरी और सब्जी की खेती, पैकेज टूरिज्म का विकास, पवन ऊर्जा उत्पादन और कूड़े की कमी और निपटान शामिल हैं। वे जापानी परिवारों द्वारा निर्धारित यात्राओं के लिए भी सहमत हुए है, जिन्होंने अपने पूर्वजों की कब्रों की यात्रा करने की मांग की थी और इस तरह के दो दौरे पहले ही किये जा चुके हैं। जापान ने निषिद्ध ड्रिफ्टनेट पद्धति का उपयोग किए बिना मछली पकड़ने के सामान और ट्राउट के लिए सुरक्षित अवसरों का प्रस्ताव दिया है और आपदा की रोकथाम में भी कई सहयोग किये हैं। बेशक ये छोटे पहल प्रतीत होते हैं, लेकिन उन्हें अंतर्निहित करना एक गंभीर उद्देश्य है जिससे विश्वास का निर्माण होगा। इसके अलावा, शिखर सम्मेलन और विदेश मंत्रियों की बैठकें आम हो गई हैं।

हांलाकि, मास्को जापानी संविधान के अनुच्छेद 9 में संशोधन के बारे में चिंतित है, जो जापान को सैन्य बल बनाए रखने या अंतर्राष्ट्रीय विवादों को निपटाने के लिए बल प्रयोग करने से रोकता है और इस तथ्य के साथ एक चिंता यह भी है कि जापान रक्षा पर दुनिया के सबसे बड़े खर्च करने वालों में से है और इसके पास एक बहुत शक्तिशाली सेना है। जापान अमेरिकी ठिकानों और मिसाइल प्रणालियों की मेजबानी करता है और इसकी क्रूज मिसाइलों, मिसाइल इंटरसेप्टर, लड़ाकू जेट और विमान वाहक पर 2024 तक 240 बिलियन डॉलर खर्च करने की भी योजना है।

इस सैन्य निर्माण के लिए जिम्मेदार चीन और उत्तर कोरिया के खतरों के बारे में पूर्वाभास हैं। दक्षिण कोरिया के हिस्से में इसी तरह की आशंकाएं हैं और दुनिया की 11वीं प्रमुख अर्थव्यवस्था होने के अलावा, अब 12वीं सबसे मजबूत सैन्य शक्ति बन गई है। मॉस्को भी इस बात से अनभिज्ञ नहीं है कि जापान और दक्षिण कोरिया संयुक्त राज्य अमेरिका से सापेक्ष स्वतंत्रता के भविष्य की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, विशेषकर विश्व स्तर पर अनुमानित अमेरिकी शक्ति में गिरावट और वाशिंगटन के राजनीतिक हलकों में अनिश्चितताओं के संदर्भ में।

हालाँकि रूस लंबे समय से जापान का एक काल्पनिक शत्रु रहा है, लेकिन श्री अबे की रूस के साथ संबंध बढ़ाने की इच्छा चीन के तेजी से बढ़ने से अधिक संबंधित है, जो जापान की तुलना में तीन गुना अधिक खर्च करता है और उत्तर कोरिया से कथित खतरा, जिसने हाल ही में जापान पर दो बैलिस्टिक मिसाइल दागे। रूस अब जापान को अपने दुश्मन के रूप में कम देखता है और मास्को के साथ संबंधों में सुधार रूस और चीन के बीच बढ़ते अर्ध-गठबंधन में एक रुकावट बन सकता है, जो कि अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी गठबंधन द्वारा वांछित ब्रेक-अप है।

टोक्यो नो के अनुसार, रूस सुदूर पूर्व में भरपूर प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है, जहाँ निवेश की जरूरत है, लेकिन यह एक छोटी आबादी द्वारा बाधित है, जबकि चीन के पास उस साझा भूमि सीमा के साथ 100 मिलियन नागरिक हैं। जापान का रूस के कुरिल के अलावा कोई क्षेत्रीय या जनसांख्यिकीय महत्वाकांक्षा नहीं है और इसके पास रूस के विशाल सन्निहित क्षेत्रों को बदलने की क्षमता है।

अधिक से अधिक सहयोग की ओर

इसलिए, हमें इस बात पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए यदि जापान और रूस दोनों एक दूसरे का अधिक से अधिक सहयोग करने के लिए आगे बढ़ते हैं और यू.एस. ने भी रूस के प्रति जापान के समायोजन के रवैये पर कोई नाराजगी नहीं दिखाई है। पिछले सितंबर में व्लादिवोस्तोक में, श्री अबे ने घोषणा की कि जापान-रूस संबंधों में असीमित क्षमता है और शांति संधि का अभाव मामलों की असामान्य स्थिति थी।

श्री पुतिन सहमत थे, यह देखते हुए कि रूसी और जापानी सेनाओं ने पहली बार अपना सहयोग दिया था और पूर्व शर्त के बिना शांति संधि के तत्काल निष्कर्ष का आग्रह किया। जापान ने इस आधार पर आपत्ति जताई कि कुरील द्वीप विवाद का मुद्दा पहले सुलझाया जाना चाहिए। बहरहाल, श्री अबे ने कहा है कि जापान-रूस संबंध इससे पहले इतने आगे तक कभी नहीं बढ़े थे।

जापान और रूस के बीच बातचीत संभवत: भारतीय जनता के लिए भी उपयोगी हैं। हालांकि कोई भी दो अंतर्राष्ट्रीय समस्याएं सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकती, लेकिन पारंपरिक रूप से पड़ोसी के सामान्य हितों की पहचान करने और अपरंपरागत रास्ते का पता लगाने के लिए यह महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता हैं। वैसे देखा जाये तो ये सब इतना भी आसान नहीं है, क्योंकि इसके लिए मजबूत नेतृत्व और एक साहसिक कल्पना की आवश्यकता है। जो न तो भारत और न ही पाकिस्तान में दिखता है। कश्मीर भी मूल रूप से करील के समान ही एक क्षेत्रीय विवाद है। लेकिन अगर दोनों पक्ष सबसे पहले पहल करने के लिए एक दूसरे का या किसी बेहतर समय का इंतजार करते रहें, तो यह कभी भी संभव नहीं हो सकेगा।

GS World टीम...

कुरील द्वीपसमूह

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में जापान ने कुरिल द्वीपसमूह में दो द्वीपों पर रूसी सैन्य बैरकों की स्थापना को लेकर रूस के समक्ष अपनी आपत्ति दर्ज कराई है।
- इन द्वीपों पर जापान अपना दावा करता रहा है।
- उधर रूस ने बैरकों साथ ही अन्य सैन्य ठिकानों के निर्माण की योजना की भी घोषणा की है।
- गौरतलब हो कि द्वीप समूह के चार द्वीपों पर रूस द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कब्जा कर लिया गया था जिसे लेकर तब से ही रूस और जापान के बीच संप्रभुता को लेकर विवाद रहा है।
- यह दोनों देशों के बीच विवाद का मुख्य बिंदु है।

क्या है?

- कुरील द्वीपसमूह रूस के साखालिन ओब्लास्त (प्रान्त) में स्थित एक ज्वालामुखीय द्वीपसमूह है।
- यह जापान के होकैडो द्वीप से रूस के कमचटका प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर तक लगभग 1300 किमी (810 मील) तक फैला है।
- कुरील द्वीपों की पूर्वी तरफ उत्तरी प्रशांत महासागर और पश्चिमी तरफ ओखोत्स्क सागर है।
- इस समूह में 56 द्वीप और कई अन्य छोटी समुद्र की सतह से ऊपर उठने वाली पत्थर की चट्टानें हैं।

पृष्ठभूमि

- कुरील के द्वीपों पर सबसे पहले वासी आइनू लोग थे। जापान ने अपने इतिहास के एदो काल में (जो सन् 1603 में शुरू हुआ) इन द्वीपों को अपना हिस्सा घोषित कर दिया।
- जापानी नियंत्रण दक्षिणी द्वीपों से उत्तर की तरफ बढ़ने लगा। उधर रूसी भी फैलकर साइबेरिया और कमचटका को अपने साम्राज्य का हिस्सा बना चुके थे और इन द्वीपों में उत्तर से दक्षिण की ओर फैलने लगे। 18वीं सदी तक इतुरूप द्वीप तक रूसी बस्तियाँ बन चुकी थीं।
- उससे दक्षिण के द्वीपों में जापानी पहरेदार तैनात थे। सन् 1811 में वासिली गोलोवनिन नामक रूसी नाविक कप्तान अपने दस्ते के साथ कुनाशीर द्वीप पर रुके तो उन्हें जापानी सैनिकों ने गिरफ्तार कर लिया। सन् 1812 में रूसी सैनिकों ने ताकादाया काहेई नामक जापानी व्यापारी को कुनाशीर पर ही गिरफ्तार किया।
- इन झड़पों को देखकर जापान और रूस की सरकारों ने बातचीत के बाद 1855 में एक संधि करी जिसके अनुसार इतुरूप और उस से दक्षिण के द्वीप जापान के हो गए और इतुरुप और उससे उत्तर के द्वीप रूस के हो गए।
- इस समझौते के अनुसार साखालिन द्वीप पर दोनों देशों के लोगों को रहने का अधिकार दिया गया। फिर 1875 में हुई सेंट पीटर्सबर्ग संधि के अनुसार जापान ने पूरा साखालिन द्वीप रूस को दे दिया लेकिन बदले में सारे कुरील द्वीप जापान को दे दिए गए।
- 1918-1925 में हुई झड़पों में जापानी फौजे (अमेरिकी और यूरोपीय दस्तों के साथ मिलकर) उत्तरी कुरील द्वीपों से कामचटका प्रायद्वीप पर पहुँच गई और उसके दक्षिणी भाग पर कब्जा कर लिया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के अंतिम दिनों में जब जापान का पलड़ा हल्का पड़ रहा था, सोवियत संघ ने पूरे साखालिन और सारे कुरील द्वीपों पर धावा बोलकर अपना नियंत्रण जमा लिया। तब से सारे कुरील द्वीप रूस के कब्जे में हैं।

- जापान अभी भी कुरील के चार सबसे दक्षिणी द्वीपों को अपना क्षेत्र बताता है। ये चार कुनाशीर, इतुरूप, शिकोतान और हबोमाए हैं। इनमें से हबोमाए वास्तव में केवल चट्टानों का एक समूह है। रूस जापान की इन मांगों को गलत बताता है और इन द्वीपों को अपना हिस्सा बताता है।

क्या है कुरिल द्वीप को लेकर विवाद?

- कुरिल द्वीपसमूह (Kuril Islands) प्रशांत महासागर के पश्चिमी किनारे पर स्थित एक ज्वालामुखीय द्वीपसमूह है। यह जापान के होकैडो (Hokkaido) द्वीप से रूस के कमचाटका (kamchatka) प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर तक फैला हुआ है।
- कुरिल द्वीपों के पूर्वी ओर उत्तरी प्रशांत महासागर और पश्चिमी ओर ओखोत्स्क सागर (Sea of Okhotsk) है।
- दूसरे विश्व युद्ध के बाद से ही यह दोनों देशों के बीच विवाद का कारण बना हुआ है। दूसरे विश्व युद्ध के अंत में जब जापान में युद्ध कमजोर पड़ गया तो रूसी सेना ने कुरिल द्वीपों पर कब्जा कर वहाँ बसे लगभग 17,000 जापानियों को भगा दिया था।
- तब से कुरिल के चारों द्वीप जिन पर जापान अपना अधिकार बताता है, को लेकर विवाद बना हुआ है। ये चारों द्वीप समूह हैं- कुनाशीर (Kunashir), इतुरूप (Iturup), शिकोतान (Shikotan) और हबोमाए (Habomai)
- द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में तत्कालीन सोवियत सेना द्वारा इन द्वीपों पर कब्जा कर लिया गया था। उसके बाद से जापान और रूस इन द्वीपों पर अपनी संप्रभुता का दावा करते आए है। यही वजह है कि विश्वयुद्ध के बाद दोनों देशों के बीच शांति समझौता नहीं हो सका है।
- इस विवाद को सुलझाने के लिये दोनों देशों के बीच कई बार राजनयिक स्तर की वार्ता हो चुकी है, लेकिन कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आए है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. 'कुरील द्वीपसमूह' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
   1. यह जापान और चीन के मध्य विवादित एक द्वीपसमूह है।
   2. इसके पूर्वी भाग में उत्तरी प्रशांत महासागर और पश्चिमी भाग में ओखोत्स्क सागर स्थित है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
   1. कुरील द्वीपसमूह का विस्तार जापान के होन्शू द्वीप से लेकर रूस के कमचटका प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर तक है।
   2. हाल के कुरील द्वीपसमूह विवाद में इसके चार द्वीपसमूह कुनाशीर, इतरूप, शिकोतान और हबोमाए शामिल है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: हाल ही में कुरील द्वीपसमूह भी मूलरूप से कश्मीर के समान ही एक क्षेत्रीय विवाद है, लेकिन जापान और रूस के द्वारा इन विवादों के नवीन समाधानों के लिए जो तरीके अपनाए गये हैं, क्या भारत और पाकिस्तान को भी इससे सीख लेनी चाहिए? विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)

नोट : 5 जनवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c), 2(c) होगा।